देश भक्त नर्तकी

चेतो, उठो ! कर्तव्य पथ का द्वार झट से खोलदो ।
हाँ ! एक स्वर से, एक होकर मातृभू जय बोलदो ।।

लेखक—
सैयद कासिमअली साहित्यालंकार
पत्रकार, जबलपुर

मूल्य ३)
तीन रुपया।